स्वदेशी रक्षा सामग्री से वायुसेना को लैस करने की तैयारी

देश में बनेंगे लड़ाकू विमान

फैसला

■ मदन जैड़ा

नई दिल्ली। सरकार ने वायुसेना को स्वदेशी रक्षा सामग्री से लैस कर आत्मनिर्भर बनाने का फैसला किया है। इसके तहत लड़ाकू एवं अन्य विमान, राडार और हवा से हवा या सतह पर मार करने वाली मिसाइलें देश में ही बनेंगे। इससे विदेशों पर से निर्भरता कम होगी और रक्षा मंत्रालय को बड़ी रकम की भी बचत होगी।

रक्षा मंत्रालय के सूत्रों के अनुसार, विदेशों से आयात होने वाली ज्यादातर महंगी रक्षा सामग्री वायुसेना के इस्तेमाल की होती है। सेना के इस्तेमाल की ज्यादातर सामग्री देश में बन रही है। नौसेना के जंगी पोत और पनडुब्बियां भी अब देश में बन रहे हैं। लेकिन लड़ाकू विमान, राडार और लड़ाकू विमानों से छोड़ी जाने वाली मिसाइलों को लेकर अभी काफी हद तक निर्भरता विदेशों पर बनी हुई है। लेकिन रक्षा मंत्रालय ने कहा कि वायुसेना को स्वदेशी रक्षा सामग्री से लैस कराने के लिए प्रयास शुरू कर दिए गए हैं और जल्द उसकी निर्भरता विदेशी सामग्री से खत्म हो जाएगी।

83 तेजस की आपूर्ति 2024 तक होगी: वायुसेना को 2024 तक स्वदेशी 83 हल्के लड़ाकू विमान तेजस के हथियारों से लैस संस्करण की आपूर्ति शुरू हो जाएगी। समय से देश को तेजस की आपूर्ति हो, इसके लिए केंद्र सरकार पूरी तरह तत्पर है। पिछले जनवरी में इसपर हस्ताक्षर हुए हैं। इसके अलावा एचएएल द्वारा एडवांस कांबेट एयरक्राफ्ट का भी निर्माण किया जा रहा है। उसमें अभी कुछ साल लगेंगे। जैसे ही वह तैयार होगा तो भारत को सुखोई या राफेल जैसे विमान नहीं लेने पड़ेंगे।

प्रशिक्षण विमान खरीदने की जरूरत नहीं

- वायुसेना के पायलट के लिए प्रशिक्षण विमान खरीदने की जरूरत भी खत्म हो जाएगी। एचएएल द्वारा तैयार एचटीटी-40 प्रशिक्षण विमान जल्द वायुसेना में शामिल होगा। परिवहन के लिए सी-295 विमान का उत्पादन भी देश में शुरू होने वाला है।
- एचसीएल द्वारा तैयार लाइट कांबेट हेलीकॉप्टर-लाइट यूटीलिटी हेलीकॉप्टर की खरीद शुरू हो चुकी है। इससे भी विदेशों से निर्भरता खत्म होगी।
- सतह से हवा में मार करने वाली ब्रह्मोस, आकाश तथा हवा से हवा में मार करने वाली अस्त्रा मिसाइलों का भी निर्माण देश में आरंभ हो रहा है।
- असलेसा, रोहिणी, एसआरई तथा पीएआर जैसे अत्याधुनिक राडार भी देश में निर्मित हो रहे हैं। इन्हें वायुसेना में शामिल किया जाने लगा है।